TEACHERS OF BIHAR
Reg. No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

जून 2026 | अंक 22

पर्यावरण विशेष

ई-पत्रिका तक पहुँचने हेतु QR कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

पर्यावरण किसी की संपत्ति नहीं है जिसे नष्ट करने का अधिकार हो; इसकी रक्षा करना हम सबकी जिम्मेदारी है। – मोहित अगाडी

मुखपृष्ठ चित्र

उत्क्रमित मध्य विद्यालय बनिया बीघा, नरहट, नवादा

पद्यपंकज काव्य संग्रह

अस्वीकरण

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से नि:शुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

संपादक मंडल

संरक्षक

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

संपादक

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

सह-संपादक

मधु कुमारी
प्रा०वि०बाँधकट्टा
आजमनगर कटिहार

अमितेष कुमार
राजकीय बुनियादी विद्यालय रेपुरा प्रखंड सकरा जिला
मुजफ्फरपुर बिहार

तकनीकी सहयोग

ई o शिवेंद्र प्रकाश सुमन

मार्गदर्शक

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
नारायणपुर, बिक्रम, पटना

संरक्षक का संदेश

प्रिय साथियों,
बिहार के शिक्षकों द्वारा सृजित मासिक काव्य-संग्रह 'पद्यपंकज' का प्रत्येक अंक साहित्यिक संवेदनाओं, सृजनात्मक चिंतन और मानवीय मूल्यों का अनुपम संगम प्रस्तुत करता है। इसमें प्रकाशित प्रत्येक रचना केवल शब्दों का संयोजन मात्र नही, बल्कि रचनाकारों के अंतर्मन की अनुभूतियों, जीवन-दृष्टि, सामाजिक सरोकारों तथा सांस्कृतिक चेतना का सजीव प्रतिबिंब है। यह संग्रह न केवल सृजनशील शिक्षकों की साहित्यिक प्रतिभा को अभिव्यक्ति प्रदान करता है, बल्कि साहित्य के माध्यम से समाज में सकारात्मक विचारों और संवेदनशीलता का भी प्रसार करता है।
मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि 'पद्यपंकज' प्रत्येक अंक के साथ निरंतर नए रचनाकारों को अपने साथ जोड़ते हुए विविध विषयों पर भावपूर्ण, मौलिक एवं उत्कृष्ट काव्य-रचनाओं का प्रकाशन कर रहा है। यह निरंतरता इस बात का प्रमाण है कि शिक्षकों के भीतर निहित साहित्य-साधना की ज्योति आज भी पूर्णसमर्पण और ऊर्जा के साथ प्रज्वलित है।
यह विशेष हर्ष का विषय है कि 'पद्यपंकज' का इक्कीसवाँ अंक 'माँ' जैसे अत्यंत पावन, संवेदनशील और सार्वकालिक विषय को समर्पित था। माँ केवल एक संबंध नही, बल्कि प्रेम, त्याग, करुणा, ममता, संरक्षण और अनंत प्रेरणा का साकार स्वरूप है। संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपनी माँ से भावनात्मक रूपसे जुड़ा होता है; इसलिए यह विषय प्रत्येक हृदय को सहज ही स्पर्श करता है। निस्संदेह, ये रचनाएँ पाठकों के हृदय में गहन संवेदनाओं का संचार करेंगी और उन्हें आत्मिक संतोष का अनुभव कराएँगी।
मैं इस अंक में अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति देने वाले सभी शिक्षक-कवियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। साथ ही, इस कृति के प्रकाशन में समर्पित भाव से योगदान देने वाले संपादकमंडल, सहयोगियों तथा समस्त पाठकों के प्रति भी अपनी हार्दिक शुभेच्छाएँ व्यक्त करता हूँ।
मेरी मंगलकामना है कि 'पद्यपंकज' इसी प्रकार साहित्य-साधना के इस पावन अभियान को निरंतर आगे बढ़ाता रहे, नई प्रतिभाओं को मंच प्रदान करता रहे तथा अपनी सृजनात्मक यात्रा के माध्यम से समाज में संवेदनशीलता, मानवीय मूल्यों और साहित्यिक चेतना का प्रकाश फैलाता रहे।
सभी रचनाकारों, पाठकों एवं साहित्य-प्रेमियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।
सादर,

चन्दन श्रीवास्तव

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा),
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है । यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है, जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ. रश्मि प्रभा
पूर्व संयुक्त निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

“पद्यपंकज” जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं “पद्यपंकज” पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ. स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,
विद्यालयी शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

संपादकीय

प्रिय साथियों

हम सभी जानते हैं कि प्रकृति हमारी जीवन की कितनी ज़रूरी आधार है। इसके बिना, मानव जीवन की कल्पना तक नहीं किया जा सकता है। स्वच्छ हवा, साफ पानी और जैव विविधता के बिना तो कोई जीव इस दुनिया में रह ही नहीं सकता। लेकिन साथियों, यह कितनी अफसोस है कि बात है कि प्रदूषण के साथ वनों की कटाई और हमारे सभी प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है और इसे करने वाले दूसरा कोई नहीं बल्कि हम स्वयं हैं।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए टीचर्स ऑफ बिहार के द्वारा प्रकाशित मासिक ई पत्रिका पद्यपंकज का पर्यावरण विशेषांक अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत है। हमारे पाठकों ने यह प्रयास किया है कि वे काव्य के माध्यम से प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और जागरूकता की भावना विकसित कर सकें, क्योंकि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार या किसी संस्था की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह हम सब का एक नैतिक कर्तव्य है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी को हमारा यह अंक एक सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने के लिए जागरूक बनाएगा। इसमें मौजूद सभी रचनाकारों को दिल से अभिनंदन और धन्यवाद जिनकी वजह से यह पत्रिका पूरी हो पाई, और इसमें दिए गए संदेश हमारे पाठकों तक पहुंच पाई।

आपके सुझाव और आपका सहयोग ही हमारे इस यात्रा का सफल परिणाम है।

धन्यवाद

अनुपमा प्रियदर्शिनी

राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दूधहन ,

ररघुनाथपुर, सीवान

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचनाकार	रचना	पृष्ठ संख्या
1.	विश्व पर्यावरण दिवस	**कार्तिक कुमार**	9
2.	वृक्ष	राम किशोर पाठक	10
3.	एक पेड़ माता के नाम	नीतू रानी	11
4.	पर्यावरण संरक्षण	मनु कुमारी	12
5.	पर्यावरण	रामपाल प्रसाद सिंह	13
6.	पेड़ लगाओ	मुन्नी कुमारी	14
7.	पर्यावरण को स्वच्छ बनायें	आशीष अम्बर	15
8.	गर्मी आई	ब्यूटी कुमारी	16

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

विश्व पर्यावरण दिवस

हरियाली का संदेश सुनाएँ, आओ मिलकर वृक्ष लगाएँ।
धरती माँ की शान बढ़ाएँ, जीवन को खुशहाल बनाएँ।
पेड़ लगेंगे, फूल खिलेंगे, सुंदर होंगे गाँव-नगर।
शुद्ध हवा का उपहार मिलेगा, महकेगा सारा यह घर।
नदियाँ निर्मल, जल हो स्वच्छ, ऐसा सुंदर काम करें।
प्रकृति माँ के हर उपवन का, मिलकर हम सम्मान करें।
पक्षी गाएँ मधुर तराने, जब वन-उपवन लहराएँगे।
हरे-भरे इन वृक्षों से हम, जीवन सुखमय पाएँगे।
प्लास्टिक का उपयोग घटाएँ, स्वच्छ धरा का मान रखें।
जल, जंगल और भूमि बचाकर, अपना भारत महान रखें।
विश्व पर्यावरण दिवस पर, लें हम सब यह पावन प्रण।
हर वर्ष पौधे खूब लगाएँ, होगा खुशियों से जीवन धन।
एक-एक पौधा हम रोपें, हर आँगन में हरियाली हो।
धरती स्वर्ग समान बने फिर, खुशहाली ही खुशहाली हो।
आओ मिलकर आज कहें हम, यही हमारा सच्चा नारा—
"पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ, हरित बने जग सारा।"

कार्तिक कुमार
मध्य विद्यालय
कटरमाला, गोरौल,
वैशाली

वृक्ष

वृक्ष है जीवन हमारा, क्यों किया इसका विनाश।
कर रहे हो फिर भला क्यों, शुद्ध संचारी तलाश।।

ताप जब बढ़ता धरा का, भूल आती याद सर्व।
थें यही अपनी धरा पर, पूर्व धारे खास गर्व।।
हो विरानी आज धरती, कर रही सबको निराश।
वृक्ष है जीवन हमारा, क्यों किया इसका विनाश।।०१।।

काट जंगल को हमी ने, दंश ली स्वीकार आज।
नित्य पैमाने नवल ले, कर रहे सम्पूर्ण काज।।
जाल में ऐसे फँसे जो, हो रहे नित ही हताश।
वृक्ष है जीवन हमारा, क्यों किया इसका विनाश।।०२।।

छोड़कर अब बात सारी, तरु लगाए नित्य खूब।
श्यामली धरती हरी कर, चैन सरिता नीर डूब।।
त्यागना होगा हमें अब, आधुनिक यह मोहपाश।
वृक्ष है जीवन हमारा, क्यों किया इसका विनाश।।०३।।

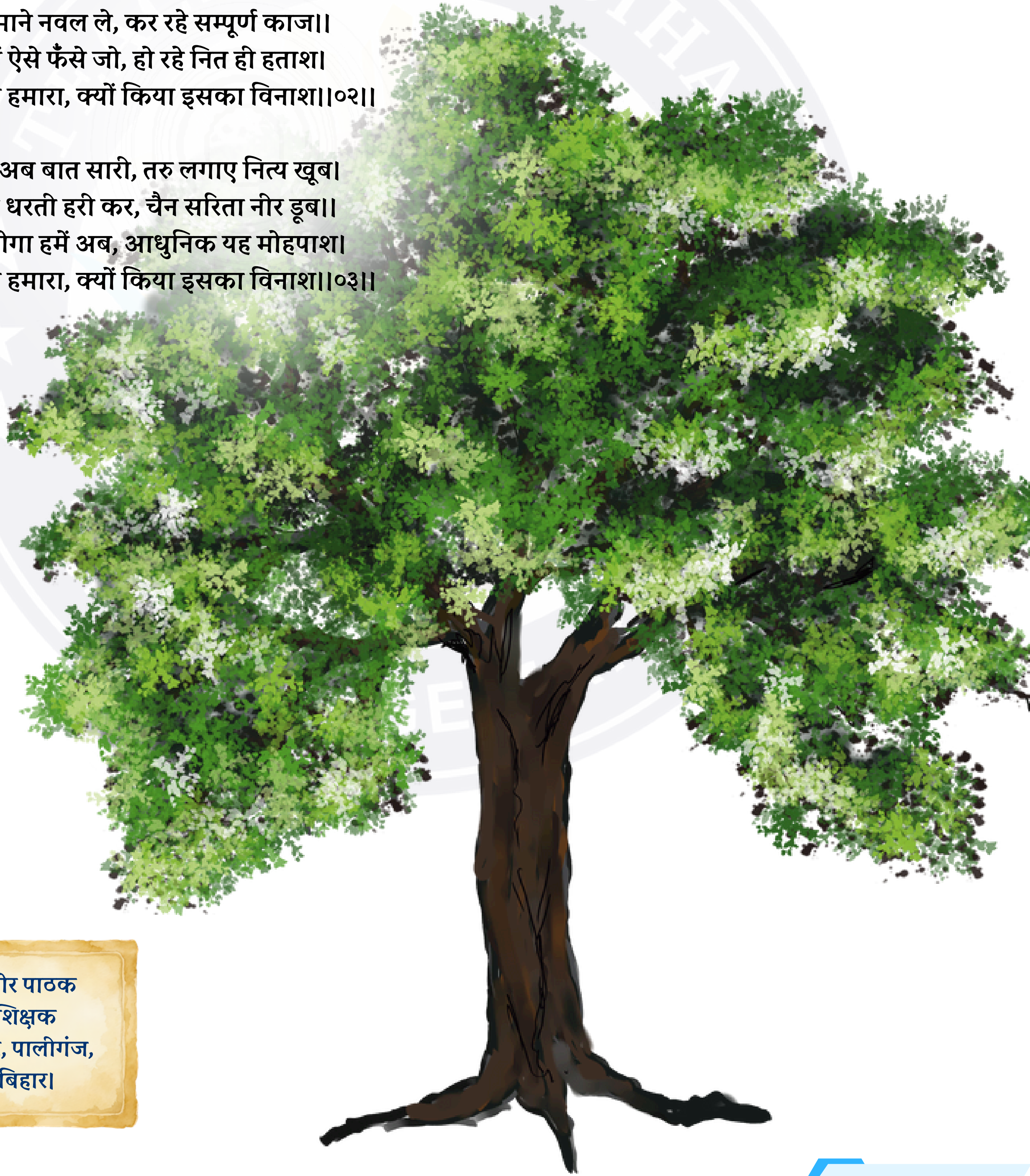

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक
सियारामपुर, पालीगंज,
पटना, बिहार।

एक पेड़ माता के नाम

आओ राजू आओ राधा
पहन के ड्रेस तुम हरा और सादा,
चलो हमसब मिलकर पेड़ लगाए
और पर्यावरण दिवस मनाएँ।

पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ
पेड़ को तुम कभी न कटाओ,
पेड़ से मिलते हैं हमें शुद्ध हवा
और मिलते हैं जड़ी बूटी दवा।

जहाँ देखेंगे पेड़ की कटाई
वहाँ बुलाएँगे सरकारी सिपाही,
पेड़ काटनेवाले को वो ले जाएगी पकड़
तब पेड़ काटने वालों का जाएगा अकड़।

लगाएँगे एक पेड़ अपनी प्यारी माँ के नाम पे
आम ,कटहल ,लीची सागवान
इनके जन्मदिन पे।

पर्यावरण को रखेंगे स्वच्छ और साफ
न आएगा कभी बीमारी का बाप,
घर को चारों तरफ से रखेंगे हरियाली
सुबह -सुबह आएगी सूरज की लाली।

कचड़ा कभी न नदी में फेंकना
शुद्ध जल हो जाएँगे दूषित,
जो उस पानी को पीएगा
हो जाएगा वह कुपोषित।

खोद तूँ लेना गड्ढा चंद
कचड़ा कर देना उसमें बंद,
अगल -बगल की करो सफाई
नही तो खाना पड़ेगा तुझे दवाई।

क्षिति जल पावक गगन समीरा
पँच रचित यह अधम शरीरा,
आओ राजू आओ राधा
पेड़ लगाएंगे सौ से ज्यादा।

नीतू रानी
म०वि० रहमत नगर
सदर मुख्यालय पूर्णियाँ बिहार

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण है हमारा जीवन आधार,
जिससे सुरक्षित है और घर संसार।
मिट्टी, जल, वायु, अनल के संग,
आसमान में छाए इंद्रधनुषी रंग।
पेड़ बड़े उपकारी होते,
कड़ी धूप में छाया देते।
नदियां, पर्वत,वन और झरनें,
इनके उपकार का क्या ही कहने।
पक्षी के कलरव पवन के शोर,
खीचें सबको संगीत की ओर।
हम सबकी प्यारी धरती मां,
देती हरपल ममता की छांव।
वन की कभी ना करें कटाई,
परिवेश प्रदूषण मुक्त हो भाई।
कचरे का करें उचित निपटान,
प्लास्टिक छोड़ें, बचाएं जान।
जल संरक्षण और पेड़ लगाएं,
अपना मानव धर्म निभाएं।
पानी को नही व्यर्थ बहाएं,
पक्षी को दाना,पानी पिलाएं।
प्राकृतिक संसाधनों का करें ना दोहन,
कहती सलमा और कहते रोहन।
पर्यावरण छेड़छाड़ से विपदा भारी,
पर्यावरण संरक्षण हमारी जिम्मेदारी।
आओ हम एक पेड़ लगाएं,
पर्यावरण में हरियाली लाएं।

मनु कुमारी,
प्राथमिक विद्यालय दीपनगर
बिचारी, राघोपुर,सुपौल

पर्यावरण

उठी जगत में आज क्यों,वही पुरानी बात फिर।
दिखा उजाला था कभी,अभी सजी है रात फिर।।
बढ़ता ताप जगा रहा, संकट सिर पर है खड़ा।
एक नही हर हाथ से, भरना है खाली घड़ा।।
देख दृश्य पर्यावरण,करते चिंतन जा रहे।
पेड़ लगाने का विषय,थल पर कब ?हर्षा रहे।।
दूर-दूर जो पेड़ हैं,गले-गले तक ला सकें।
मुश्किल इसको मानकर,संभव आज बना सकें।।
वृक्ष एक कर से लगा,पाते प्रभु सम्मान है।
धर्म ग्रंथ कहते सभी,उत्तम यह श्रमदान है।।
अपने शिशु से श्रेष्ठ हम,इनको इज्ज़त दे रहे।
इस उपकारी वृक्ष से,आशीष दुआ ले रहे।।
यूँ तो सरकारी व्ययन,झरने जैसे झड़ रहे।
ढाल दिशा सम देखकर,आपस में जन लड़ रहे।।
बूँदें वर्षा की कही,राह मध्य दम तोड़ती।
दृश्य विदारक देखकर,आँखें दुख से जोड़ती।।
सागर मंथन की तरह,बन जाए अभियान यह।
आँगन में हो उर्वशी,कम है क्या सम्मान यह।
पेड़ लगाना पर्व है, जागे जग संदेश से।
स्वच्छ रहे “अनजान” हृदय,आपस काले क्लेश से।।

रामपाल प्रसाद सिंह
‘अनजान’
सेवा निवृत शिक्षक
मध्य विद्यालय दरवे-भदौर
भंडारा पटना बिहार

पेड़ लगाओ

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ
प्रदूषण को दूर भगाओ
धरती माँ का मान बढ़ाओ।
पेड़ लगाओ,ऑक्सीजन पाओ
पर्यावरण से जीवन स्वस्थ बनाओ
हर आँगन में पेड़ लगाओ
हरा-भरा संसार सजाओ।
एक पेड़ सौ पुत्र समान
यहाँ न करो जंगल वीरान
सब मिल पूरा करो अरमान
यही हैं प्रकृति का सम्मान।
आओ सब मिल संकल्प करें
एक पेड़ लगाकर जीवन सफल करें
धरती को स्वर्ग बनाएँगे
हर दिन पर्यावरण दिवस मनाएँगे।
पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ
पेड़ लगाओ, जल बचाओ
पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ
मिलकर सुंदर कल बनाओ।

मुन्नी कुमारी
प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर
मुशहरी
प्रखण्ड- झंझारपुर, मधुबनी

पर्यावरण को स्वच्छ बनायें

बदलें हम तस्वीर जहाँ की,
सुन्दर सा एक दृश्य बनायें।
संदेश ये हम सब फैलाएँ,
आओ मिलकर पर्यावरण बचाएँ।

तापमान जब बहुत बढ़ेगा,
जीना अपना हो जाएगा भारी।
धरती मैली होती जाएगी,
पग – पग होगी घातक बीमारी।

वृक्षारोपण कर हम इसे बचाएँ,
अवांछित कचरों को नही फैलाएँ।
जागरुकता है एक सरल उपाय,
जल और धरती का दोहन कम हो जाए।

जनसंख्या – नियंत्रण भी है एक समाधान,
पर्यावरण स्वच्छ करें इंसान।
तो आओ मिलकर हम यही दोहराएँ,
पर्यावरण को सभी स्वच्छ बनाएँ।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
धनुषी
प्रखंड – केवटी, जिला – दरभंगा

गर्मी आई

गर्मी आई लू बरसाई ,
सूरज की तेज तपिश ।
धरती पर छाई लू की कहर,
निकल ना पाते घर से दोपहर ।
मैदानों में है धूप की लहर ,
लेते सहारा छतों का मगर ।
चिलचिलाती धूप में सूना पड़ा डगर,
गात से बह रहा पसीना धराधर।
गर्मी की छुट्टी है मगर ,
मस्ती में बाधा है लू की कहर।
किसान निहारते गगन ,
बादल की आस में ।
धरा की प्यास बुझे,
खेतों में आए हरियाली ।
गर्मी आई बहुत सताई,
पानी के लिए तरसाई।
ठंड हवा के लिए तड़पाई,
सूरज की तेज तपिश।
धरती पर छाई लू की कहर,
गर्मी आई गर्मी आई।

ब्यूटी कुमारी
प्रधान शिक्षक
दलसिंहसराय,
समस्तीपुर

TEACHERS OF BIHAR *The Change Makers*

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Reg. No. BR/2025/0487469

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com
padyapankaj.teachersofbihar.org
+91 7250818080 | +91 9650233010

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें